इकाई 2 चक्रीय प्रवाह एवं राष्ट्रीय आय लेखांकन*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 चक्रीय प्रवाह की अवधारणा

- 2.2.1 मुद्रा प्रवाह और वास्तविक प्रवाह में अंतर
- 2.2.2 उद्यमों तथा गृहस्थों के बीच प्रवाह
- 2.2.3 उद्यमों, गृहस्थों तथा पूँजी क्षेत्रों के बीच प्रवाह
- 2.2.4 उद्यमों, गृहस्थों सरकारी क्षेत्रों के बीच प्रवाह
- 2.2.5 एक अनावृत अर्थव्यवस्था में प्रवाह

2.3 चक्रीय प्रवाह तथा राष्ट्रीय आय

- 2.3.1 वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय
- 2.3.2 साधन आयों के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय
- 2.3.3 अंतिम व्ययों के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय
- 2.3.4 उत्पादन, आय तथा व्यय के प्रवाहों के रूप में राष्ट्रीय आय

2.4 राष्ट्रीय आय समूह

- 2.4.1 राष्ट्रीय आय तथा विभिन्न संबंधित अवधारणाएँ
- 2.4.2 विभिन्न समष्टिगत आर्थिक समूहों के बीच अंतसंबंध

2.5 सार संक्षेप

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप समझ पाएँगे

- चक्रीय प्रवाह से क्या अभिप्राय है;
- मुद्रा प्रवाहों और वास्तविक प्रवाहों में अंतर;
- विभिन्न समष्टिगत आर्थिक समुच्च्यों के बीच संबंध।

2.1 प्रस्तावना

यह इकाई चक्रीय प्रवाह एवं राष्ट्रीय आय से संबंधित है। एक अर्थव्यवस्था विभिन्न आर्थिक एजेंटों जैसे उत्पादक, उपभोक्ता, सरकार, पूँजी तथा शेष–विश्व की मदद से कार्य करती है। ये आर्थिक एजेंट उत्पादन, आय–सृजन, पूँजी–निर्माण तथा शेष–विश्व के साथ लेन–देन जैसी विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करते हैं। इन आर्थिक गतिविधियों को करते हुए विभिन्न आर्थिक एजेंटों के बीच प्रवाह होते हैं। इन प्रवाहों से हम राष्ट्रीय आय, सकल घरेलू उत्पाद इत्यादि प्राप्त कर सकते हैं।

* श्री आर. सी. मलहान (प्रो० कौस्तुभ बारिक द्वारा संशोधित)

राष्ट्रीय आय, रोजगार कीमत स्तर इत्यादि के निर्धारण के लिए समष्टिगत आर्थिक सिद्धांतों को समझने के लिए इन चक्रीय आय तथा उसके अन्य संबंधित आर्थिक समुच्च्यों को समझना आवश्यक है।

2.2 चक्रीय प्रवाह की अवधारणा

चक्रीय प्रवाह की अवधारणा एक आर्थिक इकाई से दूसरी आर्थिक इकाई के बीच वास्तविक लेन–देन या मौद्रिक लेन–देन से संबंधित है। यह प्रवाह एक तरफा नहीं है बल्कि दो तरफा है। इसलिए इसे चक्रीय प्रवाह कहा जाता है। मान लिजिए कि व्यक्ति ''क'' व्यक्ति ''ख'' को गेहूँ देता हैं, और बदले में व्यक्ति ''ख'' व्यक्ति ''क'' को चावल देता है तो इस लेन–देन को चक्रीय प्रवाह कहा जाएगा। इस बात को निम्न तरीके से दिखाया जा सकता है।

चित्रः 2.1

तीर की दिशा दिखाती है कि कौन प्राप्त कर रहा है। उदाहरण के लिए जब ''ख'' व्यक्ति, ''क'' व्यक्ति से गेहूँ प्राप्त करता है तो तीर का निशान व्यक्ति ''ख'' की तरफ होता है। उसी तरह जब व्यक्ति ''क'' व्यक्ति ''ख'' से चावल प्राप्त करता है तो तीर का निशान व्यक्ति ''क'' की तरफ होता है। उपरोक्त उदाहरण में चूँकि वस्तुओं का विनिमय हो रहा है इसलिए इन प्रवाहों को वास्तविक प्रवाह कहा जाएगा। यदि वस्तुओं के स्थान पर मुद्रा का विनिमय होता है तो इसके वास्तविक प्रवाह के साथ–साथ मौद्रिक–प्रवाह भी आ जाते हैं। मान लीजिए कि उपरोक्त उदाहरण में व्यक्ति ''ख'' व्यक्ति ''क'' से गेहूँ प्राप्त करता है और बदले में ''ख'' व्यक्ति ''क'' को मुद्रा देता है तो बाद वाला प्रवाह मुद्रा–प्रवाह है। उसी प्रकार से यदि व्यक्ति ''क'' व्यक्ति ''ख'' को चावल की खरीद के बदले मुद्रा प्रदान करता है तो भी यह बाद वाला प्रवाह मुद्रा–प्रवाह है। इन मुद्रा प्रवाहों को निम्न प्रकार से दिखाया जा सकता है।

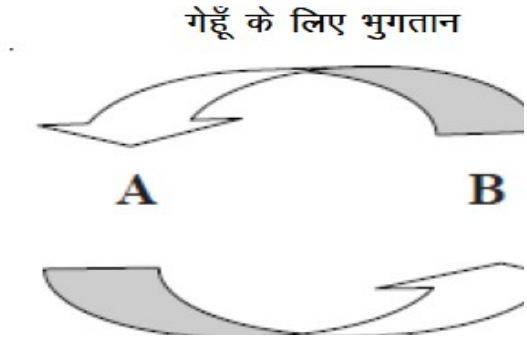

चित्रः 2.2

यदि हम 2.1 एवं चित्र 2.2 की तुलना करें तो पाते है कि वास्तविक प्रवाह सीधी दिशा में यानि बाई से दाईं ओर चलता है। दूसरी तरफ, मौद्रिक प्रवाह उल्टी दिशा यानी दाईं से बाईं ओर चलता है।

2.2.1 मुद्रा प्रवाह और वास्तविक प्रवाह में अंतर

मौद्रिक एवं वास्तविक प्रवाहों के अंतर को स्पष्ट रूप से समझना होगा। वास्तविक प्रवाह से अभिप्राय वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह से है। वास्तविक प्रवाहों का मापन कठिन होता है क्योंकि अलग–अलग वस्तुओं और सेवाओं को अलग–अलग इकाइयों में व्यक्त करते है जैसे किलोग्राम, लीटर आदि। ऐसी इकाईयों को जोड़ नहीं सकते। यही कारण है कि हम वास्तविक प्रवाहों को मौद्रिक प्रवाहों में व्यक्त करके उनका मापन करते हैं। जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि मौद्रिक प्रवाह से अभिप्राय मुद्रा के लेन–देन से है। ''क'', ''ख'' को कोई वस्तु बेचता है तो यह एक वास्तविक प्रवाह है। इसके बदले में ''ख'', ''क'' को जो भुगतान करता है, वह मौद्रिक प्रवाह है। इसी प्रकार यदि ''ख'', ''क'' को श्रम सेवाएँ देता है तो यह एक वास्तविक प्रवाह होगा। ''क'' इन साधन सेवाओं के बदले जो कुछ भुगतान करता है वह मौद्रिक प्रवाह है।

मौद्रिक तथा वास्तविक प्रवाहों के बीच अंतर एवं उनके आपसी संबंधों को निम्न चित्र की सहायता से समझाया जा सकता है। इसमें ''क'' को एक उत्पादक तथा ''ख'' को एक गृहस्थ के रूप में दर्शाया गया है:

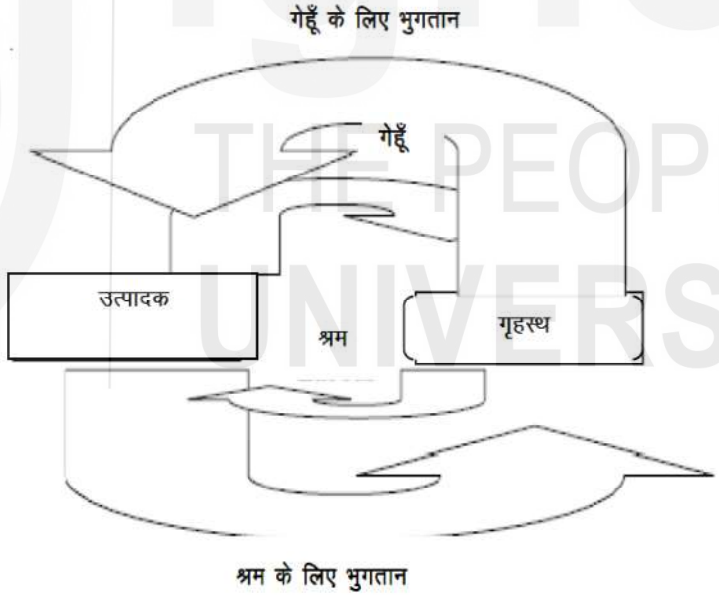

चित्र 2.3

उपरोक्त चित्र 2.3 में एक उत्पादक वस्तुओं का उत्पादन करता है तथा एक गृहस्थ को उनकी आपूर्ति करता है। तीर की दिशा वस्तुओं को प्राप्त करने वालों की ओर इंगित करती है। उसी प्रकार से एक गृहस्थ एक उत्पादक को साधन सेवाएँ प्रदान करता है जैसा कि तीर से दर्शाया गया है।

उदाहरण के तौर पर, एक उत्पादक द्वारा एक उपभोक्ता को वस्तुओं की आपूर्ति के बदले मुद्रा के रूप में उपभोक्ता द्वारा किया गया भुगतान उपभोग व्यय के रूप में दर्शाया गया है।

उसी प्रकार से उपभोक्ता से उत्पादक को प्रदान की जाने वाली साधन सेवाओं के बदले में उत्पादक द्वारा साधन भुगतान किए जाते हैं। यहाँ यह समझना होगा कि एक वस्तु–विनिमय अर्थव्यवस्था में वस्तुओं के बदले वस्तु देकर विनिमय किया जाता है। इसलिए ऐसी अर्थव्यवस्था में केवल वास्तविक प्रवाह ही होंगे। दूसरी ओर, एक अर्थव्यवस्था जहाँ वस्तुओं (सेवाओं) का विनिमय मुद्रा के द्वारा किया जाता है, उसमें वास्तविक एवं मौद्रिक प्रवाह दोनों होते है। यह भी संभव है कि आधुनिक अर्थव्यवस्था में कुछ प्रवाह केवल मौद्रिक ही हों जिनसे सम्बद्ध वास्तविक प्रवाह न हों। उदाहरण के लिए, पिता द्वारा पुत्र को दिए जाने वाले जेबखर्च से सम्बद्ध कोई वास्तविक प्रवाह नहीं होता क्योंकि पुत्र द्वारा इसके बदले में कुछ प्रदान नहीं किया जाता। इस प्रकार के चक्रीय प्रवाह पूर्ण नहीं होता। क्या हम कुछ ऐसे उदाहरण सोच सकते हैं जिनमें चक्रीय मौद्रिक प्रवाह चक्रीय चलन को पूर्ण करता है?

2.2.2 उद्यमों तथा गृहस्थों के बीच प्रवाह

विभिन्न आर्थिक इकाईयों के बीच परस्पर लेन–देन को प्रवाहों के रूप में रखकर ठीक प्रकार से समझा जा सकता है।

एक उद्यम एक आर्थिक इकाई में होती है जो गृहस्थों द्वारा दी गई साधन सेवाओं को लगाकर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करता है। यह उत्पादन या तो अन्य फर्मों को बेचता है जिन्हें मध्यवर्ती उपभोग कहा जाता है, या फिर उपभोक्ताओं को बेचता है जिसे अंतिम उपभोग कहते हैं, और या फिर मशीन अथवा उपकरणों के रूप में निवेशकर्ताओं को बेचता है, जिसे निवेश कहते हैं। उपभोक्ता वस्तुओं तथा निवेश वस्तुओं को सम्मिलित रूप से 'अंतिम वस्तुएँ' कहा जाता है जो 'मध्यवर्ती वस्तुओं' से भिन्न होती हैं।

जब एक अर्थव्यवस्था में सभी फर्मों को एक समूह के रूप में लिया जाता है तो इस समूह के भीतर एक उद्यम द्वारा दूसरे उद्यम से खरीदी गई वस्तुएँ और सेवाएँ गिनी नहीं जातीं। गृहस्थ उद्यमों को साधन सेवा (भूमि, श्रम, पूँजी तथा उद्यमशीलता) प्रदान करते हैं और उद्यमों द्वारा उत्पादित उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करते हैं। एक अर्थव्यवस्था में सभी गृहस्थों को एक समूह के रूप से लेने पर एक गृहस्थ से दूसरे गृहस्थ के बीच होने वाले आपसी लेन–देन स्वाभाविक रूप से गिने नहीं जाते हैं।

गृहस्थों एवं उत्पादकों के बीच अंतर व्यक्तियों को एक या दूसरी श्रेणी में रखने पर आधारित नहीं है; बल्कि एक व्यक्ति उपभोक्ता होने के साथ–साथ उत्पादक भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक अध्यापक जब अध्यापन सेवाएँ उत्पादित करता है तो वह एक उत्पादक कहलाएगा और ज बवह अन्य उत्पादकों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करता है तो वह गृहस्थ होगा। इस प्रकार से कह सकते हैं कि गृहस्थ एवं उत्पादकों के बीच अंतर व्यक्तियों के आधार पर नहीं बल्कि कार्यों के आधार पर हैं। उद्यमों और गृहस्थों के बीच प्रवाहों को चित्र 2.4 की सहायता से दर्शाया जा सकता है: निम्नलिखित चित्र में वास्तविक एवं मौद्रिक प्रवाहों को दर्शाया गया है, की ओर उपभोक्ता

वस्तुओं तथा सेवाओं का प्रवाह तथा गृहस्थों से उद्यमों की ओर साधन सेवाओं का प्रवाह वास्तविक प्रवाह है। उसी प्रकार से उपभोग व्यय के रूप में उपभोक्ताओं से उत्पादकों की ओर प्रवाह और उद्यमों की ओर से साधन आय के रूप में गृहस्थों की ओर प्रवाह मौद्रिक प्रवाह हैं।

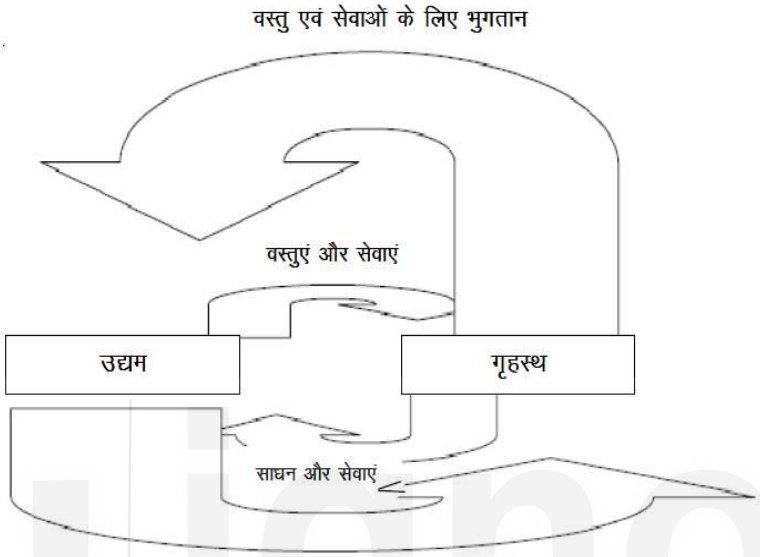

चित्र 2.4

इस प्रकार कहा जा सकता है कि चित्र 2.4, चित्र 2.3 से अधिक भिन्न नहीं है। चित्र 2.4 में सभी उत्पादकों एवं सभी उपभोक्ताओं के सम्मिलित रूप में, समूह बनाए गए हैं।

2.2.3 उद्यमों, गृहस्थों तथा पूँजी क्षेत्रों के बीच प्रवाह

अभी तक हमने जिन परिस्थितियों में प्रवाहों की चर्चा की है, उसमें कोई बचत तथा निवेश नहीं है। बचत और निवेश का अपनी चर्चा में सम्मिलित करने के लिए उद्यमों एवं गृहस्थों के साथ पूँजी क्षेत्र को सम्मिलित करना आवश्यक है।

पूँजी क्षेत्र वह क्षेत्र है जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों से बचत एकत्र करता है और उस बचत को निवेश (पूँजीगत वस्तुओं में) के उद्देश्य से उद्यमों को ऋण देता है। उद्यमों एवं गृहस्थों के साथ पूँजी क्षेत्र को सम्मिलित करते हुए, चित्र 2.5 में दर्शाया गया है:

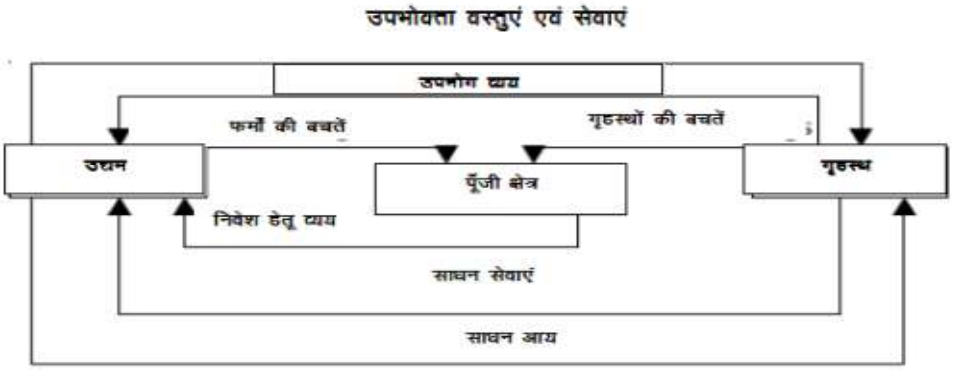

चित्र 2.5

उपरोक्त चित्र 2.4 की भाँति उद्यमों एवं गृहस्थों के बीच प्रवाहों को दर्शाया गया है तथा इनके अतिरिक्त गृहस्थों एवं पूँजी क्षेत्र के बीच तथा उद्यमों एवं पूँजी क्षेत्र के बीच भी प्रवाहों को भी दर्शाया गया है। गृहस्थ अपनी साधन आय पूरी तरह उपभोग पर व्यय करें यह आवश्यक नहीं है। आय का कुछ भाग बचा कर बैंकों मे जमा किया जा सकता है या शेयर अथवा जीवन बीमा खरीदने के लिए उपयोग किया जा सकता है। ये सभी पूँजी क्षेत्र के भाग माने जाते हैं।

इस प्रकार, गृहस्थों से पूँजी क्षेत्र की ओर तीर का निशान गृहस्थों से पूँजी क्षेत्र का बचत के प्रवाह की ओर इंगित करता है। यह बचतें पूँजी क्षेत्र गृहस्थों से, उद्यमों से अवितरित लाभों (जो भविष्य में विस्तार कार्यों हेतु रखे जाते हैं) के रूप में तथा घिसावट कोष (जो मशीन बदलने के निमित निवेश के लिए प्रयुक्त होते हैं) के रूप में बचतों को इकट्ठा करता है।

पूँजी क्षेत्र इन बचतों को निवेश के लिए उद्यमों को उधार देता है। इस प्रवाह को पूँजी क्षेत्र से उद्यमों की ओर तीर के निशान के द्वारा दर्शाया गया है।

2.2.4 उद्यमों, गृहस्थों, सरकारी क्षेत्रों के बीच प्रवाह

उद्यमों, गृहस्थों तथा पूँजी क्षेत्र के बीच प्रवाहों को चित्र 2.5 में दर्शाया गया है। अब हम इसमें सरकारी क्षेत्र के प्रवाहों को सम्मिलित करते हैं।

सरकारी क्षेत्र को दो प्रकार से देखा जा सकता है : (1) एक उत्पादक के रूप में; और (2) आय के एक पुनर्वितरक के रूप में। इस रूप में सरकार एक वर्ग पर कर लगाती है और इससे प्राप्त राशि को उद्यमों को नकद रूप में या फिर गृहस्थों को दीर्घ आयु पेंशन अथवा बेरोजगारी भत्ता के रूप में आर्थिक सहायता देती है। सरकार की उत्पादन गतिविधियों को 'सामान्य सरकार' तथा 'सरकारी उद्यम' दो रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है। साामन्य सरकार के रूप में सरकार सामूहिक उपभोग हेतु सेवाओं का उत्पादन करती है। ये सेवाएँ पुलिस सेवाओं अथवा प्रतिरक्षा–सेवाओं के रूप में हो सकती है। ये वे सेवाएँ हैं जो साधारणतया बाजार में नहीं बेची जाती। सरकार लोगों को सामूहिक रूप से उपभोग के लिए उपलब्ध करवाती है। सरकार के विभागीय अथवा गैर–विभागीय उद्यमों के कार्य को सरकारी उद्यम की श्रेणी में रखा जाता है। मुद्रा–प्रवाह में ये उद्यम का एक भाग है। इसलिए सरकार के आयों के पुनर्वितरक की भूमिका के कार्यों को ही, जिसमें सरकार सामूहिक उपभोग के लिए सेवाओं का उत्पादन करती है, अर्थव्यवस्था में प्रवाहों को समझने हेतु अन्य क्षेत्रों के साथ अलग से लिया जाता है। अन्य क्षेत्रों के बीच प्रवाहों की पहले की चर्चा की जा चुकी है। प्रवाहों के चार्ट में सरकार को सम्मिलित करके, चित्र 2.6 में दर्शाया गया है:

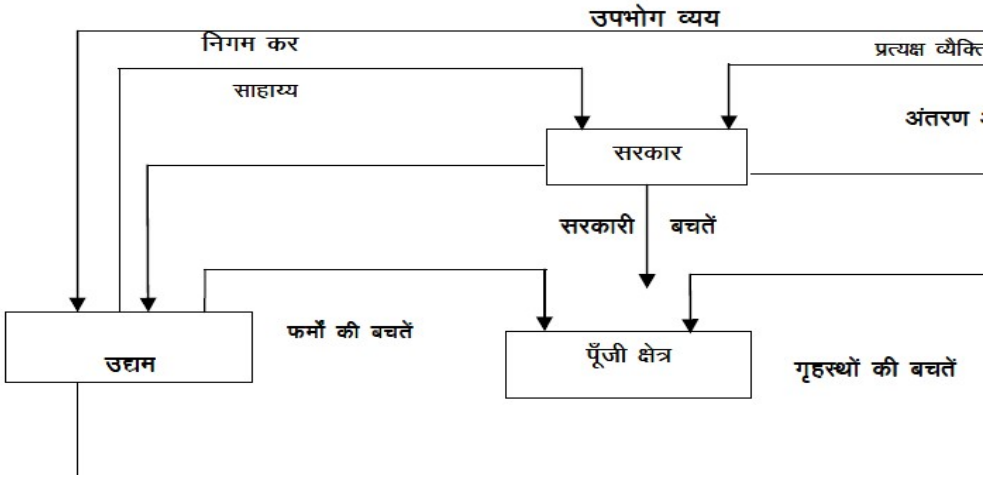

चित्र 2.6 में, चित्र 2.5 की भाँति उद्यमों, गृहस्थों तथा पूँजी क्षेत्र के साथ एक अतिरिक्त क्षेत्र यानी सरकार को सम्मिलित किया गया है। इस चित्र में सरकार की ओर से एक अतिरिक्त प्रवाह पूँजी क्षेत्र को बचत के रूप में जाता है।

यह बचत धनात्मक अथवा ऋणात्मक हो सकती है। यह ऋणात्मक होगी यदि सरकार द्वारा व्यय सरकार द्वारा प्राप्त राजस्व से अधिक हो। यदि सरकार का व्यय उसके राजस्व से कम होता है तो सरकारी बचत धनात्मक होगी।

जब हम अन्य क्षेत्रों के साथ सरकारी क्षेत्र को भी चित्र 2.6 में सम्मिलित करते हैं तो पाते हैं कि गृहस्थों द्वारा साधन सेवाओं के बदले उद्यमों से प्राप्त आयों को केवल उद्यमों द्वारा उत्पादित उपभोग वस्तुओं पर ही खर्च करना आवश्यक नहीं है। साधन आयों का एक भाग सरकार को प्रत्यक्ष वैयक्तिक करों के रूप में दिया जा सकता है। इसको गृहस्थों से सरकार की ओर तीर निशान द्वारा दिखाया गया है। दूसरी ओर, सरकार गृहस्थों को आय हस्तांतरण कर सकती है, जिसे सरकार से गृहस्थों की ओर तीर निशान से दिखाया गया है। उसी प्रकार से उद्यम भी अपनी प्राप्तियों का कुछ भाग सरकार को अप्रत्यक्ष करों और निगम करों के रूप में दे सकते हैं, जिसे उद्यम से सरकार की ओर तीर निशान द्वारा दिखाया गया है। सरकार भी अपने कर राजस्व का कुछ भाग उद्यमों को आर्थिक सहायता के रूप में दे सकती है। यह सरकार से उद्यम की ओर तीर निशान द्वारा दिखाया गया है।

2.2.5 एक अमावृत अर्थव्यवस्था में प्रवाह

चित्र 2.6 में एक संवृत अर्थव्यवस्था (एक अर्थव्यवस्था जिसके शेष विश्व के साथ आयात–निर्यात इत्यादि के रूप में किसी भी प्रकार का आर्थिक लेन–देन न हो) के प्रवाहों को दिखाया गया है। अब अंत में हम एक अनावृत अर्थव्यवस्था के विश्व के अन्य देशों (जिसे शेष विश्व कहेंगे) के साथ लेन–देन के प्रवाहों को सम्मिलित करते हैं।

जब एक अर्थव्यवस्था अनावृत अर्थव्यवस्था हो तो निम्नलिखित लेन–देन को भी अर्थव्यवस्था के प्रवाहों में सम्मिलित किया जाएगाः

1) उद्यमों के उत्पादन का कुछ भाग उपभोग अथवा निवेश कार्यों के लिए छोड़कर शेष भाग को शेष विश्व को निर्यात किया जा सकता है। इस निर्यात के बदले में शेष विश्व द्वारा उद्यमों को भुगतान किया जाता है।

2) गृहस्थों द्वारा उपभोग व्यय मात्रा अर्थव्यवस्था में ही उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं पर न होकर, शेष विश्व से आयातित वस्तुओं और सेवाओं पर भी हो सकता है।

3) गृहस्थ मात्र घरेलू उद्यमों से ही नहीं बल्कि शेष विश्व से भी साधन आय प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार, शेष विश्व भी दी गई अर्थव्यवस्था से साधन आय प्राप्त कर सकता है। विदेशों से प्राप्त साधन आया में से शेष विश्व को दी गई साधन आय कम कर देने पर विदेशों से प्राप्त 'शुद्ध साधन आय' प्राप्त होती है जो धनात्मक हो सकती है और ऋणात्मक भी। यह धनात्मक होगी जब देश के सामान्य निवासियों द्वारा शेष विश्व से अर्जित साधन आय, शेष विश्व को दी गई अर्जित साधन आय से अधिक हो।

4) एक अन्य तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि जो बचतें पूँजी क्षेत्र में एकत्र होती है, केवल गृहस्थ, उद्यमों तथा सरकार से ही प्राप्त नहीं होती, बल्कि कुछ बचतें शेष विश्व से भी प्राप्त हो सकती हैं, जिसे शेष विश्व से निवल पूँजी प्रवाह कहा जाता है। यह धनात्मक अथवा ऋणात्मक दोनों हो सकता है। जब शेष विश्व से प्राप्त ऋण, शेष विश्व को दिए गए ऋण से अधिक हो तो शेष विश्व से निवल

पूँजी प्रवाह धनात्मक होगा। यदि शेष विश्व से ऋण शेष विश्व को ऋण से कम हो तो शेष विश्व से निवल पूँजी प्रवाह ऋणात्मक होगा।

5) एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अर्थव्यवस्था के सृजित बचतों तथा शेष विश्व से प्राप्त बचतों का उपयोग केवल सकल पूँजी घरेलू पूँजी निर्माण (निवेश जमा निवल घरेलू पूँजी निर्माण) के लिए ही नहीं बल्कि निवल विदेशी निवेश के लिए भी किया जा सकता है। 'निवल विदेशी निवेश' धनात्मक और ऋणात्मक, दोनों हो सकता है। यह धनात्मक होगा जबकि इस अर्थव्यवस्था द्वारा शेष विश्व में किया गया निवेश, शेष विश्व द्वारा इस अर्थव्यवस्था में किए गए निवेश से अधिक हो। यह ऋणात्मक होगा जबकि इस अर्थव्यवस्था द्वारा शेष विश्व में किया गया निवेश शेष विश्व द्वारा इस अर्थव्यवस्था में किए गए निवेश से कम हो।

6) जैसे कि एक अर्थव्यवस्था के भीतर भी कुछ एक–तरफा हस्तांतरण हो सकते हैं। उसी प्रकार से एक अर्थव्यवस्था से शेष विश्व को और शेष विश्व से इस अर्थव्यवस्था की ओर भी एक–तरफा हस्तांतरण हो सकते हैं। इसका योग शेष विश्व से प्राप्त शुद्ध चालू हस्तांतरण कहलाता है। यह भी धनात्मक तथा ऋणात्मक दोनों हो सकता है। यह धनात्मक होगा यदि शेष विश्व से इस अर्थव्यवस्था को चालू हस्तांतरण, इस अर्थव्यवस्था से शेष विश्व को चालू हस्तांतरण अधिक हों। यह ऋणात्मक होगा जबकि शेष विश्व से इस अर्थव्यवस्था को चालू हस्तांतरण, इस अर्थव्यवस्था द्वारा शेष विश्व को चालू हस्तांतरण से कम हों।

चित्र 2.6 में एक संवृत अर्थव्यवस्था के प्रवाहों को दर्शाया गया है जबकि चित्र 2.7 में उन प्रवाहों को भी शामिल किया गया है जो संवृत अर्थव्यवस्था के खुलने से सृजित होते हैं।

अर्थव्यवस्था के खुलने के कारण पैदा होने वाले प्रवाह चित्र 2.6 में दर्शाए गए एक संवृत अर्थव्यवस्था के प्रवाहों से काफी भिन्न हैं।

उद्यमों को गृहस्थों द्वारा उपभोग व्यय से ही मुद्रा प्राप्त नहीं होती बल्कि वस्तुओं और सेवाओं के शुद्ध निर्यात से भी प्राप्त होती है।

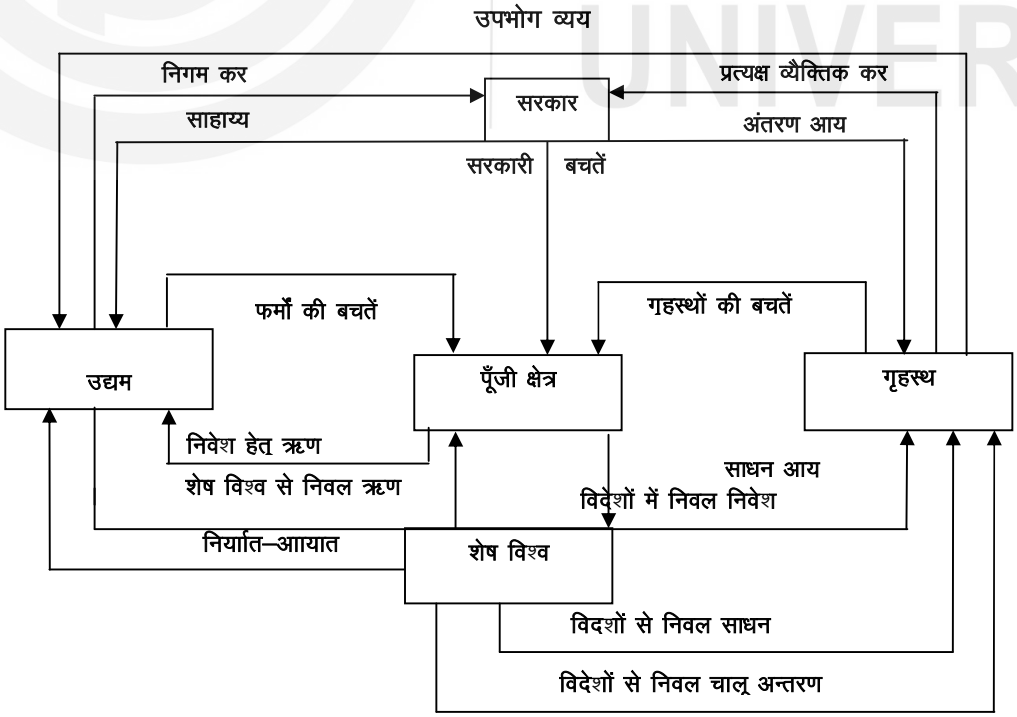

चित्र:2.7

शुद्ध निर्यात, निर्यात और आयात के अंतर से प्राप्त होता है। यह धनात्मक और ऋणात्मक दोनों हो सकता है। जब निर्यात, आयातों से अधिक हों तो यह धनात्मक होगा और जब निर्यात आयातों से कम हों तो यह ऋणात्मक होगा। निर्यातों के प्राप्तियों के प्रवाह को शेष–विश्व से प्रारंभ होकर उद्यमों की ओर तीर के निशान से दिखाया गया है और आयातों के भुगतान को उद्यमों से प्रारंभ करके शेष–विश्व की ओर तीर के निशान से दिखाया गया है।

इसी प्रकार से 'विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय' शेष–विश्व से गृहस्थों की ओर तीर के निशान से दिखाया गया है।

यही बात विदेशों से प्राप्त शुद्ध चालू हस्तांतरण पर भी लागू होती है, जहाँ तीर का निशान शेष–विश्व से गृहस्थों की ओर इंगित किया गया है। शेष–विश्व से प्राप्त ऋणों को शेष–विश्व से पूँजी क्षेत्र की ओर तीर के निशान से इंगित किया गया है।

इस प्रकार से चित्र 2.7 में एक अर्थव्यवस्था में होने वाले प्रवाहों का पूरा निरूपण है, जिसमें उद्यम, गृहस्थ सरकार, पूँजी क्षेत्र तथा शेष–विश्व क्षेत्र नामों से पाँच क्षेत्र हैं। यदि इन क्षेत्रों को और अधिक छोटे भागों में विभाजित किया जाए तो प्रवाह दिखाना और अधिक जटिल हो जाएगा। साधारण बीमा निगम, शेयर बाजार आदि में; सरकार को केंद्र, राज्य एवं स्थानीय निकायों; और शेष–विश्व को विभिन्न देशों में बाँटा जाए तो प्रवाहों की जटिलता की कल्पना की जा सकती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ऐसी स्थिति में विभिन्न क्षेत्रों के अंतरंग लेन–देनों को भी दर्शाना पड़ेगा।

बोध प्रश्न 1

1) उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से मौद्रिक तथा वास्तविक प्रवाहों के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) किसी अर्थव्यवस्था के चक्रीय प्रवाह के अध्ययन में प्रयुक्त विभिन्न आर्थिक लेन–देनों के बारे में बताइए।

.....

.....

.....

.....

3) यह बताइए कि जब उद्यमों एवं गृहस्थ क्षेत्र के साथ पूँजी क्षेत्र को सम्मिलित किया जता है तो चक्रीय प्रवाह किस प्रकार से जटिल होता है।

.....

.....

.....

.....

2.3 चक्रीय प्रवाह तथा राष्ट्रीय आय

भाग 2.2 में प्रस्तुत चक्रीय प्रवाह, एक अर्थव्यवस्था के कार्यों को समझने के लिए आवश्यक है। इन प्रवाहों के अध्ययन से हम कई समष्टिगत आर्थिक समुच्चयों को ज्ञात कर सकते हैं जो अर्थव्यवस्था के आर्थिक स्वास्थ्य की ओर इंगित करते हैं।

ऐसे कुछ समष्टिगत आर्थिक समुच्चय हैं :– सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product), शुद्ध घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product), शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product), और राष्ट्रीय आय (National Income)।

भाग 2.3 के आगामी उप–भागों में हम इन समूहों, विशेषतौर पर राष्ट्रीय आय को चक्रीय प्रवाहों से ज्ञात करने का प्रयास करेंगे। हम चित्र 2.7 का उपयोग करते हुए हम राष्ट्रीय आय को उसके तीनों दृष्टिकोणों से ज्ञात करेंगे। यह तीन दृष्टिकोण हैं – (1) वस्तुओं और सेवाओं का प्रवाह, (2) साधन आय का प्रवाह, और (3) अंतिम व्यय का प्रवाह।

2.3.1 वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय

अब हम चित्र 2.7 पर ताजा दृष्टि डालेंगे और राष्ट्रीय आय को उद्यम के छोर पर देखेंगे। यदि हम एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह के मौद्रिक मूल्य को बिना दोहरी गणना के जमा करें और स्थिर पूँजी के उपभोग हेतु प्रावधान करते हुए, विदेशों से प्राप्त कुल साधन आयों को जमा करें तो अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय प्राप्त की जा सकती है। आइए इस बात को विस्तार से समझते हैं। उद्यम उपभोक्ता वस्तुओं (c) तथा शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण (i) का उत्पादन करते हैं। यदि हम इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (x) को जमा करें तो हमें एक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय प्राप्त होगी। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि $Y = C+I+X$ जहाँ Y, राष्ट्रीय आय है और C, I तथा X को ऊपर परिभाषित किया गया है। इस परिभाषा में हमें ध्यान में रखना होगा कि वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य साधन लागत (factor cost यानि FC) पर लिया जाए, न कि बाजार कीमत पर (market price यानि MP) जहाँ $MP = FC + NIT$, जहाँ NIT निवल अप्रत्यक्ष कर हैं, (जहाँ निवल अप्रत्यक्ष कर अप्रत्यक्ष – आर्थिक सहायताएँ)। यहाँ यह भी देखना होगा कि जो वस्तुएँ और सेवाएँ एक उद्यम द्वारा दूसरे उद्यम से मध्यवर्ती उपयोग के लिए खरीदी जाती हैं (जो कच्चा माल एक उद्यम द्वारा दूसरे से खरीदा जाए) उनका मूल्य उन वस्तुओं और सेवाओं के साथ नहीं जोड़ना चाहिए जो गृहस्थ द्वारा उनके अंतिम उपभोग के लिए अथवा अर्थव्यवस्था के कुल पूँजी स्टॉक में वृद्धि के लिए प्रयुक्त हो रही हों। ऐसी दोहरी गणना से बचने के लिए किया जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि हम गेहूँ के कुल उत्पादन को ब्रेड के कुल उत्पादन के साथ जोड़ें तो हम दोहरी गणना करेंगे क्योंकि ब्रेड के मूल्य में गेहूँ का मूल्य भी पहले से सम्मिलित है।

राष्टीय आय के मापन की यह विधि उत्पादन विधि अथवा उत्पाद विधि कहलाती है। आगे हम देखेंगे कि उत्पादन विधि को मूल्य वृद्धि विधि भी कहते हैं।

2.3.2 साधन आयों के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय

हम चित्र 2.7 पर पुनः दृष्टि डालते हैं, जहाँ हम राष्ट्रीय आय समुच्चय को गृहस्थ छोर पर रखते हैं। गृहस्थ उद्यमों को वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए साधन सेवाएँ प्रदान करते हैं। ये साधन सेवाएँ चार प्रकार के उत्पादन के साधनों द्वारा प्रदान की जाती हैं। ये हैं – श्रम, भूमि, पूँजी तथा उद्यमशीलता। ये उत्पादन के साधन सीमित होते हैं।

इसलिए इन उत्पादन के साधनों के आपूर्तिकर्ताओं को उनकी साधन सेवाओं के लिए मजदूरी, किराया, ब्याज तथा लाभ के रूप में पारितोषिक दिया जाता है।

इस प्रकार यदि हम मज़दूरी, किराया, ब्याज तथा लाभ के साथ विदशों से प्राप्त साधन आयों को जमा करें तो हमें अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय प्राप्त होती है। यानि Y + W + R = In + P + X, जहाँ Y राष्ट्रीय आय है जो मज़दूरी (W), किराया (R), ब्याज (In) तथा लाभ (P) एवं विदेशों से प्राप्त कुल साधन आय का जोड़ है। जहाँ पर साधन सेवाएँ प्रदान करने के बदले गृहस्थों को प्राप्त सभी साधन आयों को जोड़ दिया गया है।

अवधारणात्मक रूप से अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय, उत्पादन प्रक्रिया के दौरान आय के रूप में राष्ट्रीय आय के समान है।

कई बार साधन आय को W, R, In तथा P के वर्गों में रखकर भिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है। जैसे श्रमिकों का मुआवज़ा (Compensation of employees), प्रचालन अधिशेष (CE), तथा स्व–रोज़गार में लगे हुए व्यक्तियों की मिश्रित आय (MY)।

इस प्रकार से Y = CE + OS + MY + X जहाँ CE श्रम को उसकी श्रम सेवाओं के बदले पारितोषिक है, OS सम्पत्ति के स्वामित्व तथा प्रबंधन के बदले मिलने वाली साधन आय है, MY साधन आय का वह भाग है जिसका CE तथा OS के रूप में विभेद नहीं हो सकता है और X विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय है (पहले से परिभाषित)। जबकि CE तथा OS को तो आसानी से समझा जा सकता है, MY के लिए थोड़ा विवेचन आवश्यक है। MY स्वरोज़गार में लगे हुओं की आय है। उदाहरण के लिए, हम एक छोटे दुकानदार को लें जो अपने घर में दुकान चलाता है, अपने एवं अपने परिवार के श्रम का प्रयोग करता है, स्वयं दुकान का प्रबंधन करता है और जोखिम उठाता है। इसकी आय को विभिन्न आय वर्गों में वर्गीकरण करना संभव नहीं होता। ऐसी साधन आय को वैकल्पिक रूप से स्व–रोज़गार युक्तों की मिश्रित आय की श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि इस आय को CE और CS में नहीं बाँटा जा सकता।

2.3.3 अंतिम व्ययों के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय

हम चित्र 2.7 का उपयोग राष्ट्रीय आय को एक अर्थव्यवस्था के विभिन्न वर्गों के अंतिम व्ययों के जोड़ के रूप में देखने के लिए भी कर सकते हैं।

दूसरे शब्दों में हम अब वस्तुओं और सेवाओं को उनके उत्पादन की दृष्टि से न देखकर उनके उपयोग की ओर देखेंगे। अंतिम व्यय के कई स्रोत हो सकते हैं जैसे उपभोक्ताओं द्वारा अंतिम उपभोग व्यय (C_h), सरकार द्वारा अंतिम उपभोग व्यय (C_g), फर्मों द्वारा शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण के लिए पूँजीगत वस्तुओं की खरीद पर व्यय (NDKF) तथा स्टॉक में परिवर्तन (K) या शेष–विश्व द्वारा शुद्ध निर्यातों (NE) के रूप में।

'स्टॉक' में परिवर्तन को वर्ष के अंत में तैयार वस्तुओं तथा कच्चे माल/अर्ध–निर्मित वस्तुओं के स्टॉक में से इन वस्तुओं के वर्ष के प्रारंभ के स्टॉक में से घटाकर प्राप्त करते हैं। स्टॉक में परिवर्तन धनात्मक होगा, यदि वर्ष के अंत का स्टॉक वर्ष के प्रारंभ के स्टॉक से अधिक हो और दूसरी ओर यह ऋणात्मक होगा यदि वर्ष के अंत का स्टॉक वर्ष के प्रारंभ के स्टॉक से कम हो।

हम सब अंतिम व्ययों के प्रवाह के रूप में, राष्ट्रीय आय को देख सकते हैं। $Y = C_h + C_g$ + NDFK + NF + X। उपरोक्त समीकरण में प्रयुक्त सभी तत्त्वों को पहले से ही परिभाषित किया जा चुका है। चूँकि राष्ट्रीय आय साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद के रूप में परिभाषित है इसलिए उपरोक्त समीकरण में से शुद्ध अप्रत्यक्ष करों को (NIT)

घटाना होगा। ऐसा इसलिए आवश्यक है क्योंकि C_h, C_g, NDFK तथा NE सभी साधारणतया बाज़ार कीमत पर दर्शाए जाते हैं, और इन सभी को साधन लागत पर दिखाने के लिए उनमें से शुद्ध अप्रत्यक्ष (NIT) घटाना आवश्यक है। अंततः व्ययों के प्रवाह के रूप में राष्ट्रीय आय के समीकरण का स्वरूप इस प्रकार से होगाः

$$Y = C_h + C_g + NDFKP + X - NIT$$

(इसमें प्रयुक्त सभी तत्वों की परिभाषा पहले से ही की जा चुकी है।)

2.3.4 उत्पादन, आय तथा व्यव के प्रवाहों के रूप में राष्ट्रीय आय

अब हम बताने की स्थिति तक पहुँच चुके हैं कि भाग 2.3.1, 2.3.2, 2.3.3 के अनुसार राष्ट्रीय आय को हम उत्पादन, आय तथा व्यय प्रवाहों से प्राप्त कर सकते हैं। वस्तुओं ओर सेवाओं के उत्पादन के लिए साधन सेवाओं की आवश्यकता होती है, और इस प्रकार से साधन आयों का सृजन होता है। इस प्रकार से प्राप्त साधन आयों को अंतिम उपभोग अथवा बचत के लिए प्रयोग किया जाता है। अंततः बचतों को देश में पूँजी निर्माण अथवा शुद्ध विदेशी निवेश के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

यदि सभी आवश्यक सांख्यिकी/आँकड़े उपलब्ध हों तो राष्ट्रीय आय ज्ञात करने के ये तीनों मार्ग एक ही मूल्य देंगे। यथार्थ में यह सभी आवश्यक आँकड़े उपलब्ध होना अनिवार्य नहीं होता। इसलिए हमें इन तीनों विधियों को मिला–जुलाकर उपयोग करने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

राष्ट्रीय आय के मापन हेतु सबसे पहला कार्य, अर्थव्यवस्था का विभिन्न औद्योगिक क्षेत्र में वर्गीकरण है, जैसे कृषि, खनन विनिर्माण, संपदा, सरकारी सेवाएँ, परिवहन सेवाएँ, वाणिज्य सेवाएँ इत्यादि। इसके बाद सूचनाओं एवं आँकड़ों की उपलब्धता के आधार पर, विधि का चयन किया जाता है। उदाहरण के लिए, कृषि एवं विनिर्माण क्षेत्र के लिए उत्पादन आँकड़े आसानी से उपलब्ध होते हैं। इसलिए हम इन क्षेत्रों का उत्पादन अथवा मूल्य वृद्धि विधि से ज्ञात करते हैं।

निर्माण क्षेत्र के लिए व्यय के आँकड़े आसानी से उपलब्ध होते हैं, इसलिए राष्ट्रीय आय में इसके योगदान को ज्ञात करने के लिए व्यय विधि का उपयोग होता है। अंततः सेवा क्षेत्र के लिए आय सृजन के आँकड़े आसानी से उपलब्ध होते हैं, इसलिए इसके राष्ट्रीय आय में योगदान को ज्ञात करने के लिए आय विधि का उपयोग अनिवार्य हो जाता है।

बोध प्रश्न 2

1) दिखाइए कि एक अर्थव्यवस्था में उत्पादन प्रवाह, आय प्रवाह तथा व्यय प्रवाह किस प्रकार से एक–दूसरे से संबंधित हैं।

.....

.....

.....

.....

2) राष्ट्रीय आय के मुख्य घटक कौन से हैं?

i) वस्तुओं और सेवाओं का चालू उत्पादन

.....

.....

.....

.....

ii) साधन आयों का चालू सृजन

.....

.....

.....

.....

3) भारत में राष्ट्रीय आय के मापन के लिए उत्पादन, आय और व्यव विधि का मिला–जुला उपयोग क्यों किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

2.4 राष्ट्रीय आय समुच्चय

राष्ट्रीय आय एक अत्यंत महत्वपूर्ण समष्टिगत आर्थिक समुच्चय है जो कुछ शर्तों के पूरा होने पर अर्थव्यवस्था की आर्थिक प्रगति का परिचायक है। इसी से संबंधित कई अन्य अवधारणाएँ है जो महत्वपूर्ण है और हमें विभिन्न समष्टि–आर्थिक समुच्च्यों के बीच संबंधों को भी भँली प्रकार समझ लेना चाहिए।

2.4.1 राष्ट्रीय आय तथा विभिन्न संबंधित अवधारणाएँ

राष्ट्रीय आय से संबंधित अवधारणाओं में से कुछ प्रमुख इस प्रकार से हैं :

1) **बाजार कीमतों पर सकल, राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product at Market Price- GNP_{MP})** : यह एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है। इसमें घिसावट शामिल होती है और वस्तुओं एवं सेवाओं का बाजार कीमतों पर मूल्यांकन किया जाता है।

2) **साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product at Factor Cost- GNP_{FC})** : यह एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है। जिसमें से घिसावट शामिल होती है और वस्तुओं एवं सेवाओं का साधन लागत (बाजार कीमत–निवल अप्रत्यक्ष कर) पर मूल्यांकन किया जाता है।

3) **बाजार कीमतों पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product at Market Price- NNP_{MP})** : यह एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा,

दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है। जिसमें से घिसावट को घटा दिया जाता है और वस्तुओं एवं सेवाओं का बाजार कीमतों पर मूल्यांकन किया जाता है।

4) **साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product at Factor Cost- NNP_{FC})** : यह एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है। इसमें से घिसावट को घटा दिया जाता है और वस्तुओं का साधन लागत (बाजार कीमत–शुद्ध अप्रत्यक्ष कर) पर मूल्यांकन किया जाता है।

5) **राष्ट्रीय आय (National Income - NY)** : यह साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद के समान ही है।

6) **बाजार कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Market Price- GDP_{MP})** : यह एक अर्थव्यवस्था के घरेलू क्षेत्र के अंतर्गत, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है जिसमें घिसावट शामिल रहती है और वस्तुओं एवं सेवाओं का बाजार कीमतों पर मूल्यांकन किया जाता है।

7) **साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Factor Cost- GDP_{FC})** : यह एक अर्थव्यवस्था के घरेलू क्षेत्र के अंतर्गत, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है जिसमें घिसावट शामिल रहती है और वस्तुओं एवं सेवाओं का साधन लागत (बाजार कीमत–शुद्ध प्रत्यक्ष कर) पर मूल्यांकन किया जाता है।

8) **बाज़ार मूल्यों पर शुद्ध राष्ट्रीय आय (Net Domestic Product at Market Price- NDP_{MP})** : यह एक अर्थव्यवस्था के घरेलू क्षेत्र के अंतर्गत, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है जिसमें घिसावट घटा दी जाती है और वस्तुओं एवं सेवाओं का बाजार कीमतों पर मूल्यांकन किया जाता है।

9) **साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product at Factor Cost- NDP_{FC})** : यह एक अर्थव्यवस्था के घरेलू क्षेत्र के अंतर्गत, दोहरी गणना न करते हुए, वस्तुओं और सेवाओं के चालू उत्पादन का मूल्य है जिसमें घिसावट घटा दिया जाता है। वस्तुओं एवं सेवाओं का साधन लागत (बाजार कीमत–शुद्ध अप्रत्यक्ष कर) पर मूल्यांकन किया जाता है।

10) **शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (Net Disposable Income - NNDY)** : यह अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष में अर्जित आय और हस्तांतरण आय का योग है जिसमें शुद्ध अप्रत्यक्ष कर शामिल होते है। यह बाज़ार कीमतों पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में शेष विश्व से प्राप्त शुद्ध चालू अंतरणों के योग से प्राप्त होती है। (NNPMP + Net Current transfer from Rest of the World)

11) **घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय (Income from Domestic Product accruing to Private Sector/Z)** : यह एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था के गृहस्थों और निजी निगम क्षेत्र को प्राप्त साधन आय है।

12) **निजी आय (Private Income - PY)** : इसमें एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष में अर्थव्यवस्था के अंतर्गत प्राप्त साधन आय तथा चालू अंतरण आयों के अतिरिक्त विदशों से प्राप्त अंतरण आय भी शामिल है।

13) **वैयक्तिक आय (Personal Income)** : इसमें एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासी गृहस्थों द्वारा प्राप्त एक वर्ष में साधन आय तथा चालू अंतरणों के अतिरिक्त विदेशों से प्राप्त अंतरण आय भी शामिल है।

14) **वैयक्तिक प्रयोज्य आय (Personal Disposable Income - PDY)** : इसे एक अर्थव्यवस्था के सामान्य निवासी गृहस्थों द्वारा प्राप्त एक वर्ष में साधन आय तथा चालू अंतरणों के अतिरिक्त विदशों से प्राप्त अंतरण आयों में से वैयक्तिक कर तथा अन्य प्रशासनिक भुगतान कर ज्ञात किया जाता है।

15) **वैयक्तिक उपभोग व्यय (Personal Consumption Expenditure - C_h)** : यह वैयक्तिक प्रयोज्य आय में से वैयक्तिक बचतों (यदि गृहस्थों की बचतें) को घटाकर प्राप्त होती है।

2.4.2 विभिन्न समष्टिगत आर्थिक समुच्च्यों के बीच अंतर्संबंध

भाग 2.4.1 में राष्ट्रीय आय तथा संबंधित अवधारणाओं से आपको परिचित कराया गया है। इस भाग में हम इन विभिन्न समुच्च्यों के बीच संबंधों का विवेचन कर रहे हैं।

- बाजार कीमतों पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद – शुद्ध अप्रत्यक्ष कर = साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद

  $\{GNP_{MP} – \text{Net Indirect Taxes (NIT)} = GNP_{FC}\}$

- साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद – घिसावट = साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद

  $\{GNP_{FC} – \text{Depreciation (D)} = NNP_{FC}\}$

- साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद – विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय = लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद

  $\{NNP_{FC} – \text{Net factor income abroad (X)} = NDP_{FC}\}$

- साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद + शुद्ध अप्रत्यक्ष कर विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय + शेष विश्व से प्राप्त शुद्ध चालू अंतरण = शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय

  $\{NDP_{FC} + NIT + X + \text{Net current transfers from rest of the world} = NNDY\}$

- शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय – विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय – शेष विश्व से प्राप्त शुद्ध चालू अंतरण – शुद्ध अप्रत्यक्ष = कर साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद

  $\{NNDY – X – \text{Net current transfers from ROW} – NIT = NDP_{FC}\}$

- साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद – घरेलू उत्पाद से सरकारी प्रशासनिक विभागों को प्राप्त आय – गैर–विभागीय उद्यमों की बचतें = घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय (z)

  $\{NDP_{FC} – \text{Income from Domestic Product accuring to government admisitrative departments} – \text{saving of non-departmental enterprises} = \text{Income from Domestic Product Accuring to Private Sector (Z)}\}$

- घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय + राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज + सरकारी प्रशासनिक विभागों से अंतरण भुगतान + शेष विश्व से शुद्ध चालू अंतरण = निजी आय।

  (Z + X + National Debt Interest + Transfer Payments by government admisitrative departments + NCT form ROW + Private Income)

- निजी आय – निजी निगमित क्षेत्र के अवितरित लाभ – निगम कर = व्यैक्तिक आय

  (Private Income – undistributed Profits of Private corporate sector – Corporation tax = Personal Income)

- व्यैक्तिक आय – प्रत्यक्ष व्यैक्तिक कर – सरकारी प्रशासनिक विभागों की विभिन्न प्राप्तियाँ = व्यैक्तिक प्रयोज्य आय।

  (Personal Income – Direct Personal Taxes – Miscellaneous Receipts of governments administrative departments = PDY)

- व्यैक्तिक प्रयोज्य आय – व्यैक्तिक उपभोग व्यय = गृहस्थों की बचतें।

  (Personal Disposable Income – Personal consumption Expenditure = Household Saving)

- गृहस्थों की बचतें + निजी निगमों की बचतें + सरकारी बचतें + घिसावट = सकल घरेलू बचत

  (Household + Depeciation = Gross Domestic Saving)

- सकल घरेलू बचत/बाजार कीमतों पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद x 100 = सकल घरेलू बचत दर

  (Gross Domestic Saving/GDP_{FC} x 100 = Rate of Gross Domestic Saving)

- सकल घरेलू पूँजी निर्माण = घिसावट शुद्ध घरेलू स्थिर निर्माण स्टॉक में परिवर्तन

  (Gross Domestic Capital Formation = Depreciation + Net Domestic Fixed Capital Formation + Change in stocks)

- सकल घरेलू पूँजी निर्माण/सकल घरेलू उत्पाद x 100 = सकल घरेलू पूँजी निर्माण दर

  (Gross Domestic Capital Formation/GDP_{MP} x 100 = Rate of Gross Domestic Capital Formation)

- शुद्ध घरेलू बचत/बाज़ार कीमतों पर शुद्ध घरेलू उत्पाद x 100 = शुद्ध घरेलू बचत दर (Net Domestic Saving/NDP_{MP} x 100 = Rate of Net Domestic Saving)

- सकल घरेलू पूँजी निर्माण – घिसावट = शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण

  (Gross Domestic Capital Formation – Depreciation + Net Domestic Capital Formation)

- शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण/बाज़ार कीमतों पर शुद्ध घरेलू उत्पाद × 100 = शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण दर (Net Domestic Capital Formation/NDP_{MP} × 100 = Rate of Net Domestic Capital Formation)

- सकल घरेलू पूँजी निर्माण दर – सकल घरेलू बचत दर = शुद्ध विदेशी पूँजी अंतः प्रवाह की दर = शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण दर = शुद्ध घरेलू बचत दर

  (Rate of Gross Domestic Capital Formation – Rate of Gross Saving)

  = Rate of Net Foreign Capita inflow

  = Rate of Net Domestic Capital Formation = Rate of Net Domestic Saving

बोध प्रश्न 3

1) निजी उपभोग व्यय से प्रारंभ कर साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद ज्ञात करें।

.....

.....

.....

.....

2) शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय और निजी प्रयोज्य आय में संबंध बताइए।

.....

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित के बीच किस आधार पर अंतर किया जाता है :

i) सकल घरेलू उत्पाद तथा शुद्ध घरेलू उत्पाद

.....

.....

.....

.....

ii) सकल राष्ट्रीय उत्पाद तथा शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद

.....

.....

.....

.....

iii) राष्ट्रीय आय तथा शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय

.....

.....

.....

.....

iv) बाज़ार कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद तथा साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद

.....

.....

.....

.....

v) बाज़ार कीमतों पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद तथा शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय

.....

.....

.....

.....

vi) वैयक्तिक आय तथा वैयक्तिक प्रयोज्य आय

.....

.....

.....

.....

2.5 सार संक्षेप

इस इकाई में हमने आपको चक्रीय प्रवाहों की अवधारणाओं के बारे में बताया। यह भी बताया कि इन चक्रीय प्रवाहों से किस प्रकार से एक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय ज्ञात की जा सकती है।

चक्रीय प्रवाही की अवधारणा का संबंध एक वर्ग से दूसरे के बीच वास्तविक एवं मुद्रा के लेन–देन से है। वास्तविक लेन–देनों के प्रवाह से हमें वास्तविक प्रवाह प्राप्त होते हैं तथा एक वर्ग से दूसरे वर्ग की ओर मुद्रा का प्रवाह हमें मौद्रिक प्रवाह प्रदान करता है।

उद्यमों और गृहस्थों के बीच वास्तविक एवं मौद्रिक प्रवाहों का अध्ययन किया जा सकता है। इस अध्ययन का विस्तार एक ऐसी अर्थव्यवस्था तक कर सकते हैं जहाँ उद्यम, गृहस्थ तथा पूँजी क्षेत्र होते हैं। इसी अध्ययन का आगे विस्तार करते हुए इसमें सरकारी क्षेत्र तथा शेष विश्व को भी शामिल किया जा सकता है। उद्यमों, गृहस्थों, पूँजी क्षेत्र, सरकारी क्षेत्र तथा शेष विश्व क्षेत्र – सभी को सम्मिलित करते हुए हम खुली अर्थव्यवस्था में प्रवाहों का अध्ययन करते हैं।

राष्ट्रीय आय का तीन स्वरूपों में अध्ययन किया जा सकता है। ये हैं :– वस्तुओं और सेवाओं का प्रवाह के रूप में, साधन आयों के प्रवाह के रूप में; और अंततः अंतिम व्ययों के रूप में। राष्ट्रीय आय के इन तीनों आयामों से एक–समान राष्ट्रीय आय का योग प्राप्त होता है।

इस इकाई के अंतिम भाग में हमने राष्ट्रीय आय तथा विभिन्न संबंधित अवधारणाओं का अध्ययन किया और उन अवधारणाओं के बीच अंतर्संबंधों से परिचित करवाया।

जिन प्रमुख अवधारणाओं से परिचय कराया गया है, वे हैं : बाज़ार मूल्यों का सकल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{MP}), बाज़ार कीमतों पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (GNP_{MP}), शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (NNDY), घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय (Income from Domestic Product accruing to Private Sector), निजी आय (Private Income), वैयक्तिक आय (Personal Income), वैयक्तिक प्रयोज्य आय (Personal Disposable Income), वैयक्तिक बचतें (Personal Savings), सकल एवं निवल घरेलू पूँजी निर्माण दरें (Rate of Gross and Net Domestic Capital Formation), सकल एवं शुद्ध घरेलू बचत की दरें (Rate of Gross and Net Domestic Savings), और शुद्ध विदेशी पूँजी प्राप्तियाँ (Net foreign Capital Inflow)। इन अवधारणों के बीच अंतर्संबंधों को समझने का भी प्रयास किया गया है।

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) मौद्रिक प्रवाह वे होते है जो एक विनिमयकर्ता से दूसरे विनिमयकर्ताओं के बीच अथवा के एक वर्ग से दूसरे के बीच मुद्रा के रूप में होते हैं। उदाहरण के लिए उत्पादक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं और उन्हें गृहस्थों को देते हैं, जिसके बदले में उत्पादकों को मुद्रा के रूप में भुगतान किया जाता है। दूसरी ओर, गृहस्थ उत्पादकों को साधन सेवाएँ प्रदान करते हैं और उत्पादक उनको पारितोषिक (साधन आय) प्रदान करते हैं। दूसरी ओर, वास्तविक प्रवाह है – वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादकों से गृहस्थों की ओर प्रवाह और गृहस्थों की ओर साधन सेवाओं का प्रवाह।

2) आर्थिक लेन–देनों की उत्पादन, आय सृजन, पूँजी स्टॉक में वृद्धि और शेष विश्व के साथ लेन–देन में वर्गीकृत किया जा सकता है। लेन–देनकर्ता उद्यम, गृहस्थ सरकार पूँजी क्षेत्र एवं शेष विश्व में विभाजित किए जाते हैं।

3) जब उद्यम और गृहस्थ क्षेत्र के साथ पूँजी क्षेत्र को भी चक्रीय प्रवाह में शामिल किया जाता है तो वह जटिल हो जाता है। यह जटिलता इसलिए होती है, वह उद्यमों द्वारा उत्पादि उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च कर दी जाए। उसका एक भाग गृहस्थों द्वारा बचत करके पूँजी क्षेत्र की ओर अंतरित कर दिया जाता है।

उसी प्रकार से उद्यम अपनी प्राप्तियों (जो उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री से प्राप्त होती है) का एक भाग घिसावट को एवं अवितरित लाभों के रूप में बचत के रूप में रखें।

वे बचतें जो गृहस्थों एवं फर्मों से पूँजी क्षेत्र को प्राप्त होती है, उनको उद्यमों को ऋण के रूप में प्रदान किया जाता है जिसका उपभाग वे पूँजीगत वस्तुओं (स्थिर पूँजीगत वस्तुएँ अथवा स्टॉक में परिवर्तन) के निवेश में लगा दें। इस प्रकार से बचत और निवेश को भी चक्रीय प्रवाह में शामिल किया जाता है।

बोध प्रश्न 2

1) उत्पादन प्रवाह से हमारा अभिप्राय है, एक वर्ष में एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन। वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए हमें साधन सेवाओं की आवश्यकता होती है जो उत्पादन के साधनों के प्रयोग से साधन आय यानी आय प्रवाह सृजित होता है।

साधन सेवाओं के बदले में गृहस्थों को प्राप्त साधन आयों को या तो उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने पर खर्च किया जाता है या बचत की जाती है। जो भी बचत होती है, वह बाद में अर्थव्यवस्था में पूँजी स्टॉक में वृद्धि (अथवा निवेश) के लिए प्रयुक्त होती है।

इस प्रकार उत्पादन प्रवाह, आय प्रवाह सृजित करता है और आय प्रवाह व्यव प्रवाह अथवा पूँजी स्टॉक में वृद्धि प्रवाह को सृजित करता है। यह प्रक्रिया सतत् रूप से चलती है क्योंकि उपभोग व्यय तथा पूँजीगत व्यय, उद्यमों को प्राप्त होते हैं, तथा फिर से उत्पादन प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।

2) i) वर्तमान में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को उपभोक्ता और सेवाओं एवं पूँजीगत अथवा निवेश वस्तुओं में वर्गीकृत किया जा सकता है। उत्पादित वस्तुएँ एवं सेवाएँ मध्यवर्ती प्रकृति की भी हो सकती है लेकिन वे ऊपर के दो वर्गों में नहीं रखी जाती क्योंकि ऐसे में एक अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद में दोहरी गणना हो जाएगी।

ii) एक वर्ष में सृजित आयों का प्रचालन अधिशेष, कर्मचारियों का मुआवजा और स्व–रोजगार युक्त लोगों की मिश्रित आय में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रचालन अधिशेष में किराया, ब्याज एवं लाभ शामिल होते हैं। स्व–रोज़गार युक्त लोगों की मिश्रित आय साधन आयों को वह प्रकार है जहाँ प्रचालन अधिशेष तथा कर्मचारियों के मुआवज़े के बीच भेद करना संभव नहीं होता। एक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय प्राप्त करने के लिए घरेलू तौर पर पर साधन आयों के विदेशों से निवल साधन आयों को भी जोड़ना होगा।

iii) चालू रूप से सृजित व्ययों को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है – (क) निजी अंतिम उपभोग व्यय (ख) सरकारी अंतिम उपभोग व्यय (ग) सकल घरेलू पूँजी निर्माण (घ) शेष विश्व को शुद्ध निर्यात।

उपरोक्त (क), (ख), (ग) एवं (घ) में से निवल अप्रत्यक्ष कर एवं घिसावट को घटाकर तथा विदेशों से शुद्ध साधन आय जमा करके हम एक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय प्राप्त करते हैं।

3) किसी अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय के मापन के लिए उत्पाद, आय एवं व्यय तीन तरीके हैं। इन तीनों विधियों से प्राप्त राष्ट्रीय आय का योग एक समान है। भारत में राष्ट्रीय आय के मापन के लिए हम इन तीनों विधियों को मिला–जुलाकर उपयोग करते हैं। हम कृषि इत्यादि के लिए उत्पादन विधि, सेवा क्षेत्र के लिए आय विधि तथा निर्माण क्षेत्र के लिए व्यय विधि का उपयोग करते हैं।

हम इन तीनों विधियों का उपयोग इसलिए करते हैं क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध आँकड़ें भिन्न भिन्न है।

ऐसे क्षेत्र जहाँ उत्पादन आँकड़ें आसानी से उपलब्ध हैं, वहाँ हम उत्पादन विधि का उपयोग करते हैं। ऐसे क्षेत्र जैसे सेवाओं में सृजित आय के आँकड़ें आसानी से उपलब्ध होते हैं, इसलिए वहाँ राष्ट्रीय आय में उनके योगदान के लिए आय विधि का उपयोग होता है। निर्माण क्षेत्र में व्यय विधि का उपयोग होता है क्योंकि वहाँ व्यय के आँकड़े आसानी से उपलब्ध होते हैं।

बोध प्रश्न 3

1) व्यैक्तिक उपभोग व्यय + व्यैक्तिक बचतें – व्यैक्तिक प्रयोज्य आय

- व्यैक्तिक प्रयोज्य आय + प्रत्यक्ष व्यैक्तिक कर + सरकारी प्रशासकीय विभागों की छिटपुट प्राप्तियाँ = व्यैक्तिक आय
- व्यैक्तिक आय + निजी निगमों के अवितरित लाभ + निगम कर = निजी आय
- निजी आय – विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय – राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज – सरकार से अंतरण = घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय
- घरेलू उत्पाद से निजी क्षेत्र को प्राप्त आय + गैर–विभागीय सरकारी उद्यमों की बचतें + सरकारी प्रशासकीय विभागों को घरेलू उत्पाद से प्राप्त आय = साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद
- साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP_{FC}) + घिसावट = साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद

2) शुद्ध राष्ट्रीय प्रयोज्य आय – शुद्ध अप्रत्यक्ष कर – घरेलू उत्पाद से सरकारी प्रशासकीय विभागों को प्राप्त आय – गैर–विभागीय उद्यमों की बचत + राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज + सरकार से चालू अंतरण – अवितरित लाभ – निगम कर – प्रत्यक्ष व्यैक्तिक कर – सरकारी प्रशासकीय विभागों की छिटपुट प्राप्तियाँ = व्यैक्तिक प्रयोज्य आय

3) i) घिसावट

ii) विदेशों से शुद्ध साधन आय

iii) शुद्ध अप्रत्यक्ष कर + विदेशों से शुद्ध चालू अंतरण

iv) शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

v) विदेशों से शुद्ध चालू अंतरण

ivi) प्रत्यक्ष वैयक्तिक कर + सरकारी प्रशासकीय विभागों की छिटपुट प्राप्तियाँ।